REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

ग्रामीण क्षेत्र मे कार्यरत महिला श्रमिको की स्थिति का अध्ययन (इन्दौर जिले के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. मनीष दुबे
श्री वैष्णव वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर.

प्रस्तावना :–

भारतीय सामाजिक व्यवस्था की मूल इकाई ग्राम है, क्योंकि भारत एक ग्राम प्रधान देश है । भारतीय जनसंख्या का 70 प्रतिशत भाग गाँव सामाजिक व्यवस्था का मूल है, उसी प्रकार कृषि भारतीय राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है, ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मूल आधार भी कृषि है । लेकित दुर्भाग्यवश कृषि कार्य में रत इस विशाल जनसंख्या के एक बहुत बडे भाग के पास न तो अपनी स्वयं की कोई भूमि है, और न ही निर्धनता के कारण उसमें भूमि प्राप्त करने का सामर्थ्य है, इसलिए ये कथित कृषक विवश होकर भू–स्वामियों की भूमि पर श्रमिकों के रूप में कार्य करते है और इस रूप में उन्हें जो कुछ पारश्रमिक प्राप्त होता है, उससे वे अपना और अपने परिवार का ष्रण पोषण करते है । इसी आधार पर इनको कृषि श्रमिको की संबा प्रदान की गई है ।

षरत मे प्राचीन काल से कृषि सबसे अधिक और महत्वपुर्ण उद्योग रहा है, आज षि षरत की जब राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है, तो कृषि क्षेत्र के उत्पादन को ही प्रमुखता से लिया जाता है । जब से देश मे पंचवर्षीय योजना संचालित हो रही है तब से कृषि को ही अधिक महत्व दिया जाता है । शरत की आर्थिक व्यवस्था मे खेती का महत्व इसी से स्पष्ट हो जाता है कि जिस वर्ष किसी बडे क्षेत्र मे फसले नष्ट हो जाती है तो उस प्रदेश की आर्थिक स्थिति हिल उठती है, उसका परिणाम यह होता है कि कारखानो द्वारा तैयार माल को माँग कम हो जाती है और मीलों को मन्दी का सामना करना पडता है । फसलो के नष्ट हो जाने से राज्य की मालगुजारी कम हो जाती है । मालगुजारी मे छुट देनी पडती है और करोडों रूपयें दुर्भिक्ष, पीडितों की सहायता के लिए राज्य को व्यय करने पडते हैं । उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि हमारा आर्थिक ढांचा कृषि तथा संबंधी श्रम के विभिन्न अवयवों पर निर्भर है ।

वर्तमान समय मे स्त्री और पुरूष दोनो को समान दर्जा दिए जाने के प्रयास किए जा रहे है। सरकार महिलाओं को जहा एक ओर 50 प्रतिशत तक आरक्षण प्रत्येक क्षेत्र मे दे रही है, वही भारतीय समाज मे आज भी महिलाओ का स्थान उनकी समानता से दूर है। ग्रामीण महिलाओं के सन्दर्भ मे यदि बात की जाए तो ग्रामीण महिलाएं किताबी ज्ञान से दूर परंतु संस्कृति और परम्पराओं को मानने वाली होती है । साथ ही ग्रह कार्यो के अलावा वे मजदुरी आदि कर परिवार को मजबूत बनाने का प्रयास भी करती है। क्योंकि षरत एक कृषि प्रधान देश है इसलिए यहा के यहाँ के ग्रामो मे निवास करने वाली महिलाओं की संख्या कृषि उत्पादक कार्यो मे ज्यादा है वही घरेलु उद्योगो के अलावा अन्य उत्पादन कार्य जैसे कारखानो निर्माणो एवं संस्थानो मे कार्यरत महिलाओं की संख्या बड रही है।

शोध उद्देश्य :–

वर्तमान परिदृष्य मे कई आर्थिक परिवर्तन होते जा रहे है, क्योकि – भारत एक कृषि प्रधान देश है और षरतीय अर्थव्यवस्था ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आधारित है। व ग्रामीण क्षेत्रों मे स्त्री एवं पुरूष दोनो ही समानता से आर्थिक गतिविधियों सलग्न होते है। इसी प्रकार इन्दौर जिला जो की म.प्र. की वाणिज्यिक राजधानी माना जाता है। यहाँ के ग्रामीण क्षेत्रो की महिलाएँ जो की निम्न परिवारो मे निवास करती है की मजदूरी आदि करती है उनकी कार्य के दौरान क्या समस्या है उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिती को जानने एवं कार्य दशाओ को समझने के उददेश्य से प्रस्तुत शोध किया गया है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध हेतू इन्दौर जिले के ग्रामीण क्षेत्रो मे कार्यरत 200 महिला श्रमिको से प्रस्तुत साक्षात्कार कर प्रश्नावली के माध्यम से प्राथमिक समंक एकत्र किए गए है एवं इन समंको का तालिका एवं रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शन कर निष्कर्ष प्रस्तुत किए है।

शोध सारांश :–

1) आयु के आधार पर महिला श्रमिकों का वर्गीकरण –

क.	आयु समूह (वर्ष)	संख्या	प्रतिशत
1.	19 – 30	45	22.5
2.	30 – 50	146	73
3.	50 – 60	9	0.5
योग		**200**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है की कुल महिला श्रमिको मे 19 वर्ष से 30 वर्ष की 22.5%, 30 वर्ष से 50 वर्ष की 73% , एवं 50 वर्ष से 60 वर्ष तक किी 0.5% महिलाए कार्यरत है । सर्वाधिक 30 से 50 वर्ष की महिलाएँ श्रम अधिक कर रही है।

2) सर्वेक्षित महिला श्रमिकों की साक्षरता की स्थिति

क.	शिक्षा की स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1.	शिक्षित	41	20.5
2.	अशिक्षित	159	79.5

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है की अधिकतम महिला श्रमिक अशिक्षित है ।

3) महिला श्रमिक की वैवाहिक स्थिति का अध्ययन

क.	विवाह स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1.	विवाहित	171	85.5
2.	अविवाहित	29	14.5

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि इन्दौर जिले की महिला श्रमिकों मे सर्वाधिक विवाहीत है।

4) सर्वेक्षित महिला श्रमिकों के आवास की स्थिती

क.	आवास स्थिति	महीला श्रमिक की संख्या	प्रतिशत
1.	स्वंम का	149	74.5
2.	किराये का	51	25.5

उपरोक्त तालिका से निष्कर्ष निकलता है की अधिकतर ग्रामीण महिला श्रमिक स्वयं के निवास मे रहती है एवं लगभग 25 प्रतिशत आज किराये के निवास मे रहती है।

5) नियोक्ताओं से निर्धारित राशी प्राप्त होने की स्थिति

क.	तय मजदूरी / प्राप्त होने की स्थिती	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	198	99
2.	नही	02	1

निष्कर्षता , उपरोक्त तालिका से कहा जा सकता है की महिला श्रमिको को उनकी तय दर से मजदूरी प्राप्त होती है।

महिला श्रमिक की योग्यता व क्षमताओ का पूर्ण लाभ हमारी कृषि व्यवस्था को नही मिल रहा है, इसका प्रमुख कारण वे समस्याएँ है जिनका सामना आज महिला श्रमिकों को करना पड रहा है।

महिला श्रमिक की पारिवारिक व सामाजिक समस्याएँ :–

1 . खेतिहर अनुसूचित जनजाति महिला श्रमिक मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों मे निवास करती है, ग्रामीण स्तर पर खेतिहर अनुसूचित जनजाति महिला श्रमिको का साक्षरता का प्रतिशत बहुत कम है। अशिक्षित महिलाएं कृषि की उन्नत तथा वैज्ञानिक विधियों तथा आधुनिक तकनीकों से अनभिज्ञ रहती है। कोई भी नई खोज की जाती है, उसका ज्ञान भी इन महिलाओं को नही होता है। जो कृषि विस्तार अधिकारी आथवा अनुसंधानकर्ता किसानों को आधुनिक वैज्ञानिक रीति से कृषि कार्य की जानकारी देने गाँवो मे किसानो के पास जाते है, वे केवल पुरूष वर्ग किसानो से ही मिलते है। कृषि कार्य खेतिहर महिलाओं द्वारा किया जाता है, वह भी परम्परागत साधनों तथा प्राचीन अवैज्ञानिक पद्धतियों के द्वारा किया जाता है। अतः अशिक्षा खेतिहर महिला श्रमिकों की मुख्य समस्या है, जिसके कारण विकास धारा से कटी हुई है।

2 . ग्रामीण अनुसूचित जनजाति समाज अत्यन्त रूढिवादी तथा पिछडा हुआ है, यहाँ महिलाओं की स्थिति बहुत दयनीय है। बाल विवाह की कुरीति प्रचलित है, जिसके कारण महिला अनेक यातनाओं को सहन करती हुई किशोरावस्था मे ही माँ बन जाती है।

3 . बुनियादि जरूरतें जैसे– पानी, ईधन, आश्रय, शिक्षा, स्वास्थ, विद्युत उपलब्धता की आपूर्ति मे ही इनका ज्यादातर समय व शक्ति चली जाती है। उनमे लिंग के आधार पर घरेलु कार्यो का विभाजन न्यूनाधिक रूप मे यथावत बना हुआ है। पारंपरिक घरेलू कार्य अधिकांशतः महिला श्रमिकों द्वारा ही संपादित किसे जाते है। निम्न व विषम सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि, संसाधनों का अभाव, दोहरा कार्य बोझ, श्रमसाध्य जीवन शैली के कारण कृषि क्षेत्र में कार्यरत महिला श्रमिक पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, तथा स्वास्थ संबंधित समस्याओं से ग्रस्त रहती है।

4 . परिवार की आय में बराबरी और कभी–कभी अधिक योगदान देने के बाद भी उनको अपने परिवार तथा समाज में सम्मान तथा अधिकार प्राप्त नही है। दिन–रात कठिन श्रम करने के बाद भी उनके श्रम का न तो उचित मूल्य मिलता है और न उचित आदर, इससे उनमे स्वालम्बन व आत्मविश्वास की भावनाओं की कमी होने लगती है।

5 . महिला श्रमिकों को मजदूरी अधिनियम से कम मजदूरी का भुगतान किया जा रहा है, जिससे वे अपना विकास नही कर पाती है।

6 . वर्ष भर कार्य नही मिलने के कारण कृषि मालिकों व साहूकारों से, पडोसी, रिश्तेदारों से उधार लेकर दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ती करने को मजबुर है।

सुझाव :–

महिला श्रमिको की आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने से यह सहज ही सिद्ध हो गया है कि उनकी पारिवारिक सामाजिक और विशेषकर आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनिय हैं। एक सुखी एवं संपन्न ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रचना के लिए उसमें द्रुतगामी एवं प्रभावी सुधार अपेक्षित है। इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय सुझाव निम्नलिखित है –

1. अशिक्षा – महिलाओं के विकास की सबसे बड़ी बाधा है। हमारे देश में जो शिक्षा महिलाओं को दी जा रही है, वह इन महिला श्रमिकों की आवश्यकता एवं उनके परिवेश को ध्यान में रख कर नहीं बनाई जाती है। अतः यह उनके लिए उपयोगी नहीं है। खेतिहर महिलाओं के लिये एक ऐसी शिक्षा नीति का निर्माण करना चाहिए, जो ग्रामीण आवश्यकताओं व समस्याओं का समाधान करती है।
2. बाल–विवाह जैसी कुप्रथाओं पर रोक लगाना चाहिये, जिससे महिलाओं के स्वास्थ्य पर बुरा असर न पड़े।
3. कार्यस्थल पर महिलाओं को आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था होनी चाहिये।
4. शासन को महिला विकास कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए उनका सुचारू रूप से संचालन करना चाहिये, और महिला श्रमिकों के लिये सुदृढ़ महिला श्रमिक अधिनियम का निर्माण करना चाहिये।
5. महिला श्रमिकों के जीवन स्तर को निम्न रखने में आर्थिक कारण प्रमुख है, जब तक इन महिलाओं की आर्थिक व्यवस्था सुदृढ़ नहीं होगी, तब तक वे अपनी स्थिति में सुधार नहीं ला सकती है। पर्याप्त रोजगार देकर ही इनकी स्थिति को बेहतर बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. प्राथमिक अर्थशास्त्र, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
2. खेतिहर अनुसूचित जनजाति महिला श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन गौरेलाल डावर।
3. द रोल ऑफ वीमन अमंगफार निकोवारम् जनजाति वॉल्यूम – 6 (पी. प्रकाश)
4. भारतीय ग्रामीण समस्याऐं (प्रो. नानावटी और प्रो. आंजरिया)

डॉ. मनीष दुबे
श्री वैष्णव वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर.